CHAPTER 2,

आरोहण

PAGE 31, प्रश्न - अभ्यास

12:1:2:प्रश्न - अभ्यास:1

यूँ तो प्रायः लोग घर छोड़कर कहीं न कहीं जाते हैं, परदेश जाते हैं किंतु घर लौटते समय रूप सिंह को एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक क्यों घेरने लगी?

उत्तर: यह सौ प्रतिशत सच है कि अक्सर लोग नौकरी की तलाश या पढ़ाई करने के लिए घर से निकल जाते हैं, लेकिन हां वे यह काम सभी की सहमति से करते हैं। रूप सिंह ने भी घर छोड़ा था

लेकिन बिना किसी को बताये चुपचाप ही घर से निकल गया था। जब वो छोटा था,अपने पिता और भाई को बिना कुछ बताए एक साहब के साथ चला गया। आज कई सालों के बाद वह अपने घर लौट रहा था। उसके मन में अपनापन और आत्मीयता का भाव नजर आ रहा था। परन्तु बिना किसी के सहमति से घर छोड़ जाने की बात पर शर्म भी आ रही थी। उसके मन में तरह - तरह के विचार आ रहे थे की वो अपने घर के लोगो का सामना कैसे करेगा ,वह उन से क्या बोलेगा ,ये सब सोच कर उसे बहुत लज्जा आ रही थी उसे कुछ भी समझ नहीं रहा था और उसके मन में एक झिझक की भावना जन्म ले रही थी।

12:1:2:प्रश्न - अभ्यास:2

पत्थर की जाति से लेखक का क्या आशय है? उसके विभिन्न प्रकारों के बारे में लिखिए।

उत्तर: पत्थर की जाति से, लेखक विभिन्न प्रकार के पत्थरों और चट्टानों को संदर्भित करता है जो इस प्रकार हैं:

(ए) ग्रेनाइट - गुलाबी रंग की आभा लिए ग्रेनाइट पत्थर बहुत कठोर और भूरे रंग का पत्थर होता है।

(B) आग्नेय / बसाल्ट - ऐसे पत्थर जिनका निर्माण ज्वालामुखी के लावा द्वारा होता है

(ग) रेतीला या बलुआ पत्थर - रेत के बने चट्टान / पत्थर

(डी) संगमरमर - चूना का पत्थर में बदलने से इसका निर्माण होता है, यह अन्य पत्थरों की तुलना में बहुत नरम होता है।
(४) परतदार - यह महीन कणों की मेटामॉर्फिक चट्टानों से बनता है।

12:1:2:प्रश्न - अभ्यास:3

महीप अपने विषय में बात पूछे जाने पर उसे टाल क्यों देता था?

उत्तर: रास्ते में, रूप सिंह और शेखर के बीच बातचीत के दौरान, भूप सिंह और शैला के विषय में कई बार चर्चा हुई, जिसके कारण महीप सिंह को कुछ- कुछ समझ आ गया था कि रूप सिंह कौन है ? रूप सिंह महीप का चाचा था और इसी

अनुमान के कारण महीप उन्हें कुछ बताना नहीं चाहता था। न तो अपने विषय में कुछ कहना चाहता था और न ही वह अपने परिवार बारे में बात करना चाहता था। इसलिए जब भी रूप सिंह ने महीप से कुछ निजी सवाल पूछे, तो महीप ने बात टाल दी। जो अन्याय उसकी माँ के साथ हुआ था वो उसकी चर्चा नहीं करना चाहता था ,की कैसे उसके पिता द्वारा एक अन्य महिला को घर लाने के कारण माँ ने आत्महत्या कर ली थी और इस घटना से आहत और परेशान होकर उसने अपना घर छोड़ दिया था।

12:1:2:प्रश्न - अभ्यास:4

बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब क्यों लगा?

उत्तर: जब रूप सिंह ने तिरलोक को बताया की वह शहर में लोगो को पहाड़ पर चढ़ना सिखाने की नौकरी करता है ,और उसे इस काम के लिए चार हजार रुपये प्रति माह मिलते है। तो उसकी ये बात तिरलोक सिंह को बहुत अजीब लगी वो हैरान हो गया कि पहाड़ी क्षेत्रो में तो पहाड़ पर चढ़ना आम बात है और ये दैनिक जीवन का एक भाग होता है। बच्चे - बूढ़े ,स्त्री - पुरुष रोज कितनी बार पहाड़ पर चढ़ते - उतरते है। ऐसा करने के लिए उन्हें कोई सिखाता नहीं है और रूप सिंह ऐसी नौकरी का गुणगान कर रहा है की वो लोगो को पहाड़ पर चढ़ना सिखाता है और उसे इस काम के लिए ४००० महीना मिलता है। ये बात तिरलोक सिंह को हैरानकर रही थी की सरकार इतने छोटे काम के लिए इतना ज्यादा वेतन कैसे दे सकती

है।

12:1:2:प्रश्न - अभ्यास:5

रूप सिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भूप सिंह के सामने बौना क्यों पड़ गया था?

उत्तर: भूप सिंह विशुद्ध रूप से एक पहाड़ी व्यक्ति थे, दिन में कई बार पहाड़ों पर चढ़ते और उतरते थे, और इसके लिए उन्हें रस्सी या किसी अन्य चीज का सहारा लेने की आवश्यकता भी महसूस नहीं होती थी। दूसरी ओर, रूप सिंह ने पहाड़ पर चढ़ना सीखा था, उसने इसका प्रक्षीणन लिया था, लेकिन फिर भी उनकी चढ़ाई भूप सिंह जैसी नहीं थी, रूप सिंह रस्सी और अन्य उपकरणों की मदद से पहाड़ पर चढ़ता था। लेकिन भूप सिंह दुर्गम से

दुर्गम के पहाड़ो पर बिना किसी सहारे से चढ़ जाता था। इसके विपरीत रूप सिंह के लिए ऐसा करना असंभव था। रूप सिंह को अपने भाई भूप सिंह ने घर जाने के लिए सहायता दी, यह देखते हुए कि भाई बिना किसी सहारे के पहाड़ों पर चढ़ रहा है। उसने खुद को उसके सामने बौना महसूस किया, और उसके अंदर का घमंड दूर हो गया।

12:1:2:प्रश्न - अभ्यास:6

शैला और भूप ने मिलकर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नयी ज़िंदगी की कहानी लिखी?

उत्तर: भूप सिंह ने भूस्खलन के कारण आए मलबे को पहले हटाया। शैला और भूप दोनों ने मिल कर खेतों को ढलाननुमा बनाया ताकि बर्फ लंबे समय

तक स्थिर न रहे । जब खेत तैयार हो गए तो पानी की समस्या उनके सामना आ गयी पानी की समस्या से निजात पाने के लिए उन्होंने जलप्रपात की दिशा को मोड़ने की सोच, क्योंकि इस तरह से उनके खेतों में पानी की समस्या हल हो सकती है। फिर समस्या यह आई कि गिरते पानी से पहाड़ को कैसे काटा जाए, बहते पानी में यह संभव नहीं था। उन्होंने इसके लिए क्वार के मौसम को चुना जब वसंत के मौसम में पानी जम जाता है और क्वार में सुबह की धूप के कारण धीरे-धीरे पिघलता है, ऐसे में पहाड़ को आसानी से काटा जा सकता था और उन्होंने यह काम शुरू किया और आखिरकार जलप्रताप की दिशा खेतों की तरफ करने में सफल रहे। जब सर्दियों के मौसम में झरना जम जाता तो उन्होंने इसे आग की गर्मी से पिघला दिया और खेतों में पानी की व्यवस्था

की। अपनी मेहनत के बल पर जीवन की एक नई कहानी लिखी।

12:1:2:प्रश्न - अभ्यास:7

सैलानी (शेखर और रूप सिंह) घोड़े पर चलते हुए उस लड़के रोज़गार के बारे में सोच रहे थे जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रखा था और स्वयं पैदल चल रहा था। क्या आप भी बाल मज़दूरों के बारे में सोचते हैं?

उत्तर: जब भी हम किसी बाल मजदूर को देखते हैं, तो हम अपनी किस्मत को दुआ देते है अक्सर हम बच्चो को चाय की दुकानों और होटलों में बर्तन धोते हुए, चाय वितरित करते, टेबल-कुर्सियों की सफाई करते हुए देख लेते है। होटलो में जब ग्राहक

विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों खाते है तो बाल मजदुर अपनी ललचाए आँखों से देखते रहते हैं, विशेषकर वे अपनी उम्र के बच्चों को देखते है जो अपने माता-पिता के सामने कुछ लेने या खरीदने की जिद्द करते है बाल मजदूरों की आँखों में इस क्षण को आप महसूस कर सकते है। बाल मजदूरों को देख कर हमारे मन में दया के भाव उत्पन होते है ऐसे बच्चों को सरकार, की तरफ से उनकी शिक्षा और खान पान दोनों की मदद मिलनी चाहिए। उनके पालन - पोषण की जिम्मेदारी सरकार को बेहतर तरीके से उठानी चाहिए। सिर्फ ऐसा कानून बनाने से कि बाल श्रम नहीं करना चाहिए, स्थिति में कोई भी बदलाव नहीं होगा। हमें भी बाल मजदूरों के सहायता के लिए अहम् कदम उठाने चाहिए। लेकिन मुझे समझ नहीं आता

कि हम उनके उनके बारे में क्यों नहीं सोचते शायद हम बहुत स्वार्थी और क्रूर हैं।

12:1:2:प्रश्न - अभ्यास:8

पहाड़ों की चढ़ाई में भूप दादा का कोई जवाब नहीं! उनके चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: भूप सिंह एक मेहनती, दृढ़-निश्चयी, स्वाभिमानी और परिश्रमी व्यक्ति हैं, एक मेहनती व्यक्तित्व के साथ, जीने वाले इंसान है उन्होंने अपनी जमीन, अपनी मिट्टी से दूर जाने के बारे में कभी नहीं सोचा पहाड़ पर रहते हुए बहुत मेहनत की और यहाँ स्थिति को बेहतर बनाने बहुत परिश्रम किया परिणामस्वरूप, उनकी मेहनत रंग लायी और उन्होंने भूकंप समाप्त होने के बाद

सब कुछ फिर से खड़ा कर दिया। वो हमेशा सरल जीवन के बजाये एक कठोर जीवन को जिया और कभी भी मुश्किलों से हार नहीं मानी और किसी के सामने अपना हाँथ नहीं फैलाया वह स्वभिमानी के साथ एक मेहनतकश इंसान थे।

12:1:2:प्रश्न - अभ्यास:9

इस कहानी को पढ़कर आपके मन में पहाड़ों पर स्त्री की स्थिति की क्या छवि बनती है? उस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।इस कहानी को पढ़कर आपके मन में पहाड़ों पर स्त्री की स्थिति की क्या छवि बनती है? उस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर- "आरोहण " कहानी पढ़ने के बाद हमें पहाड़ों की महिलाओं की स्थिति काफी दुखद, और

अफ़सोसजनक लगती है और इससे भी अधिक घृणित सोच यह है कि जो महिलाएं इतनी ईमानदार, मेहनती हैं और कंधे से कंधा मिलाकर चलने की हिम्मत रखती हैं, उन स्त्रियों की इतनी दयनीय स्थिति क्यों है? जो महिलाएं अपनी मेहनत से पहाड़ और झरने के रुख को मोड़ने की हिम्मत रखती हैं, वो पुरुषों के द्वारा हार जाने लिए मजबूर हैं, ऐसा क्यों? इस कहानी में शैला ने क्या हासिल किया? उसने, भूप सिंह के साथ, असंभव से कार्य को संभव बना दिया। वह सब कुछ जीतने में सक्षम है, लेकिन अंततः अपने पति के धोखे से हार जाती है। इतना मेहनती होने के बावजूद उसे एक पुरुष द्वारा धोखा मिला। वो जीवन किस काम का सा जीवन है जिसमें उसके व्यक्तित्व के उदय के बजाय एक नारकीय जीवन मिले ! मानसिक और शारीरिक कष्ट मिले। वह अपने पति से ईमानदारी और वफ़ा की आशा भी

नहीं कर सकती है और जीवन से उदास होकर आत्महत्या करने के लिए मजबूर होती है।